नोट -

1. नवीन छात्रों की उच्चारण शुद्धि हेतु अमरकोष पढ़ाएँ (समयानुसार)।
2. वेदमन्त्रों की अक्षुण्ण परम्परा को बनाए रखने हेतु प्रत्येक छात्र का उच्चारण एवं स्वर शुद्ध हो इसका विशेष ध्यान रखते हुए छात्रों को उच्चारण स्थान इत्यादि से परिचित कराये।
3. नवीन छात्रों से उनका गोत्र, शाखा इत्यादि ज्ञात कर उसको स्वशाखाध्ययन कराने का प्रयत्न करें।
4. प्रत्येक वर्ष के पाठ्यक्रम का गुरुमुख से सम्पूर्ण अध्यापन एवं स्वाध्याय पूर्वक कण्ठस्थीकरण उसी वर्ष में पूर्ण करना अनिवार्य है।
5. छात्रों को परम्परागत सस्वर अध्ययन पद्धति से ही वेद अध्यापन कराना अनिवार्य है। जैसे -

   16 सन्था पद्धति

   अथवा

   10 पाठ

   10 वल्लि/दशावृत्ति/सन्था
6. प्रत्येक माह के अन्त में (पढाये गए विषयों की) मासिक परीक्षा कर छात्रों के कण्ठस्थीकरण, उच्चारण आदि की स्थिति का अवलोकन करें। यदि न्यूनता हो तो पूर्ण करें।
7. छात्रों की उच्चारण शुद्धि एवं ज्ञानवर्धन के लिए प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या के पश्चात् विष्णुसहस्त्रनाम, महिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम्, दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्, अन्नपूर्णास्तोत्रम्, भजगोविन्दम्, प्रज्ञाविवर्धनस्तोत्रम्, रामरक्षास्तोत्रम् इत्यादि स्तोत्रों का समयानुसार अभ्यास एवं पाठ करें, जिससे भारतीय परम्परा में श्रद्धा एवं उत्साह बना रहें।
8. गतवर्षों का पाठ्यक्रम छात्र को कण्ठस्थ है या नहीं ज्ञात करने हेतु परीक्षण (Assessment) किया जाएगा।
9. परीक्षक को विगत सभी वर्षों के पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछने का पूर्ण अधिकार होगा।
10. सस्वर वेदाध्ययन करने वालों की संख्या शनैः शनैः क्षीण हो रही है। अतः श्रद्धावान्, मेधावान् एवं दार्ढ्य बुद्धि वाले छात्रों की वेदाध्ययन में रुचि उत्पन्न करने हेतु आवश्यक प्रयत्न करना।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)
सामवेद कौथुम शाखा पाठ्यक्रम

वेदविभूषण प्रथमवर्ष (उत्तरमध्यमा प्रथमवर्ष / कक्षा XI समकक्ष)					
पदपाठ पूर्वार्चिक सम्पूर्ण। उत्तरार्चिक द्वितीय प्रपाठक पर्यन्त। ऊहगान दशरात्र षष्ठ विंश पर्यन्त।					
क्रमांक	**माह / पक्ष**	**पाठ्यक्रम बिन्दु**	**मन्त्र संख्या**	**अंक**	**अध्ययन-अध्यापन**
1	प्रथम माह	पूर्वार्चिक पदपाठ प्रथम प्रपाठक द्वितीय प्रपाठक	 96 97	10	प्रत्येक पाठ्यक्रम बिन्दु को एकादश सन्था दें और एकादश तिरुवै (दशावृत्ति) करायें। दशावृत्तिपूर्वक कण्ठस्थ पाठ की नित्य आवृत्ति करें।
2	द्वितीय माह	ऊहगान - दशरात्र पर्व प्रथम विंश	 20	10	
3	तृतीय माह	पूर्वार्चिक पदपाठ तृतीय प्रपाठक चतुर्थ प्रपाठक	 99 98	10	
4	चतुर्थ माह	ऊहगान - दशरात्र पर्व द्वितीय विंश	 20	10	
5	पञ्चम माह	ऊहगान - दशरात्र पर्व तृतीय विंश	 20	10	
6	षष्ठ माह	पूर्वार्चिक पदपाठ पञ्चम प्रपाठक षष्ठ प्रपाठक	 96 99	10	
7	सप्तम माह	ऊहगान - दशरात्र पर्व चतुर्थ विंश	 20	10	
8	अष्टम माह	ऊहगान - दशरात्र पर्व पञ्चम विंश	 20	10	
9	नवम माह	पूर्वार्चिक पदपाठ आरण्यक महानाम्नी ऊहगान - दशरात्र पर्व षष्ठ विंश	 65 20	10	
10	दशम माह	उत्तरार्चिक पदपाठ प्रथम प्रपाठक द्वितीय प्रपाठक	 124 111	10	
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			साम - 120 पदपाठ - 885	100 अंक	

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)
सामवेद कौथुम शाखा पाठ्यक्रम

वेदविभूषण द्वितीयवर्ष (उत्तरमध्यमा द्वितीयवर्ष / कक्षा XII समकक्ष)					
उत्तरार्चिक पदपाठ - तृतीय प्रपाठक से सम्पूर्ण। ऊहगान - दशरात्र पर्व सप्तम विंश से सम्पूर्ण। छान्दोग्य उपनिषद् - प्रथम, द्वितीय अध्याय					
क्रमांक	**माह / पक्ष**	**पाठ्यक्रम बिन्दु**	**मन्त्र संख्या**	**अंक**	**अध्ययन-अध्यापन**
1	प्रथम माह	ऊहगान - दशरात्र पर्व सप्तम विंश	 20	10	प्रत्येक पाठ्यक्रम बिन्दु को एकादश सन्था दें और एकादश तिरुवै (दशावृत्ति) करायें। दशावृत्तिपूर्वक कण्ठस्थ पाठ की नित्य आवृत्ति करें।
2	द्वितीय माह	उत्तरार्चिक पदपाठ तृतीय प्रपाठक चतुर्थ प्रपाठक	 145 144	10	
3	तृतीय माह	ऊहगान - दशरात्र पर्व अष्टम विंश	 20	10	
4	चतुर्थ माह	उत्तरार्चिक पदपाठ पञ्चम प्रपाठक षष्ठ प्रपाठक	 172 142	10	
5	पञ्चम माह	ऊहगान - दशरात्र पर्व नवम विंश	 20	10	
6	षष्ठ माह	उत्तरार्चिक पदपाठ सप्तम प्रपाठक अष्टम प्रपाठक	 128 148	10	
7	सप्तम माह	ऊहगान - दशरात्र पर्व दशम विंश	 20	10	
8	अष्टम माह	छान्दोग्य उपनिषद् प्रथम अध्याय	 104	10	
9	नवम माह	ऊहगान - दशरात्र पर्व एकादश विंश	 22	10	
10	दशम माह	उत्तरार्चिक पदपाठ नवम प्रपाठक छान्दोग्य उपनिषद् द्वितीय अध्याय	 111 82	10	
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			साम - 102 पदपाठ - 990 छा.उप. -186	100 अंक	